पर्वतीय पर्यटन
विशेष संदर्भ - अरावली

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल

(*पूर्व जॉइंट डायरेक्टर*)

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

राजस्थान सरकार, कोटा, राजस्थान, भारत

प्रो. प्रमोद कुमार सिंघल

विभागाध्यक्ष भूगोल (उच्च शिक्षा)

पूर्व प्राचार्य

राजकीय कन्या महाविद्यालय, बूंदी

राजस्थान सरकार, कोटा, राजस्थान, भारत

PARVATEEY PARYATAN : VISHESH SANDARBH - ARAAVALEE

Copyright © : Dr. Prabhat Kumar Singhal
Publishing Rights ℗ : VSRD Academic Publishing
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

ISBN-13: 978-93-91462-35-2
FIRST EDITION, OCTOBER 2021, INDIA

Printed & Published by:
VSRD Academic Publishing
(*A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.*)

Disclaimer: The author(s) are solely responsible for the contents compiled in this book. The publishers or its staff do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the Authors or Publishers to avoid discrepancies in future.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise, without the prior permission of the Publishers & Author.

Printed & Bound in India

VSRD ACADEMIC PUBLISHING

A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

REGISTERED OFFICE
154, Tezabmill Campus, Anwarganj, KANPUR – 208003 (UP) (IN)
Mb: 98999 36803, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

MARKETING OFFICE
340, FF, Adarsh Nagar, Oshiwara, Andheri(W), MUMBAI–400053 (MH)(IN)
Mb: 99561 27040, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

प्रो. (डॉ.) बृज किशोर शर्मा
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
इतिहास विभाग और
निदेशक (अकादमिक) से.नि.,
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,
कोटा (राजस्थान)

प्राक्कथन

मानव सभ्यता का विकास नदियों के किनारे ही नहीं वरन पहाड़ों कि गोद में भी हुआ हैं। भारत की प्राचीनतम पर्वत श्रृंखलाओं में अरावली का नाम उल्लेखनीय है। पर्वतों से निकलने वाले झरने नदी का रूप धारण कर आगे बढ़ते हैं।

पहाड़ों में आदि कालीन मानव को सुरक्षा का वातावरण मिला जहां उसने अपनी समाज और संस्कृति का निर्माण किया। अरावली की पर्वत श्रृंखलाओं में आदि काल से बड़े हुए भील, गरासिया, सहरिया,

मेर, मीणा, मेव, आदि समुदायों ने अपनी स्वतंत्र संस्कृति विकसित की जो आज भी अपने महत्व और प्रासंगिकता को बनाए हुए हैं। इन समुदायों की संस्कृति अरावली पर्वत श्रृंखला की देन है अतः इन समुदायों की जीवन चर्या और संस्कृति पर्यटकों के कोतूहल का विषय है।

अरावली के खनिज और वन उपज भी महत्वपूर्ण रहे हैं। यहां उपलब्ध जड़ी बूटियां स्थानीय समुदायों को निरोगी रखने में सहायक रही हैं। यहां प्राप्त शहद, गोंद, कत्था, हरड़, बेहडा, आंवला, केर सांगरी, काचरी आदि वनउत्पाद अपना महत्व बनाए हुए हैं। यहां प्राप्त फल भी महत्वपूर्ण रहे हैं। पहाड़ों के आचार बट्टी, कोदरा, सवां, आदि भी उल्लेखनीय है। इसी प्रकृति की देन हैं कि यहां की संस्कृति प्रकृति के अनुरूप समाज का विकास होता है। इन समुदायों ने बाहरी आक्रमणकारियों से संघर्ष किया एवं शासकों की सहायता की। महाराणा प्रताप की सेना में भीलों का योगदान कोन भूल सकता है।

राजपूत शक्ति एवं राज्यों के उदय में अरावली पर्वत श्रृंखला की निर्णायक भूमिका रही है। राजस्थान के अधिसंख्य दुर्ग, महल, सुरक्षा चौकियां, निगरानी मीनार, किलेबंदी,आदि में अरावली की पर्वत श्रृंखलाएं सहायक रही हैं। राजस्थान में मध्यकालीन दुर्गो, मंदिरों, महलों एवं अन्य ऐतिहासिक स्मारक पर्यटकों के आकर्षण का विषय रहे हैं।

दुर्गो में जल संग्रह एवं प्रबन्धन और पहाड़ के नीचे जल श्रोतों का निर्माण आदि भी पर्यटकों की रुचि का विषय है। अरावली के कई पर्वतीय किलों को यूनेस्को ने भारत की विश्व धरोहर में शामिल कर अरावली पर्वत का गौरव बढ़ाया है। इसकी के मध्य वन्य जीव और अभयारण्य भी पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इस पुस्तक के

लेखकों ने सिलेवार विवरण में इन सबको सम्मिलित किया है।

प्राचीन पर्वत अरावली के सन्दर्भ को व्यापक रूप से पुस्तक में रेखांकित किया गया हैं। इस पर्वत का अधिकांश भाग राजस्थान में पाया जाता है जो 14 जिलों की अमूल्य सम्पदा है। राजस्थान के माउंट आबू पर्वत पर स्थित गुरु शिखर अरावली का सबसे ऊंचा शिखर है। अनेक नदियों का उद्गम स्थल होने के साथ इसके मध्य भारत की शानदार झीलें शोभायमान हैं। गर्मियों के मौसम में इसके वनों में व्यापक रूप से पाए जाने वाले पलास वृक्ष के केसरिया रंग के फूलों के कारण "जंगल की ज्वाला" कहा जाता है।

अरावली की नैसर्गिक आभा की वजह से ही माउंट आबू, डूंगरपुर, उदयपुर, अजमेर, जयपुर और अलवर सुंदर शहर बने। इनमें माउंट आबू, उदयपुर, अजमेर और जयपुर आज विश्व पर्यटन मानचित्र पर आसमान में ध्रुव तारे की तरह चमक रहे हैं।

अरावली की वजह से राजस्थान में पर्यटन उद्योग को पंख लगे और विदेशी मुद्रा आय का बड़ा माध्यम बना। अरावली के गर्भ में छिपा खनिजों का अकूत भंडार राज्य की मजबूत अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है। अरावली पर्वत के सन्दर्भ में विश्व और भारत के पर्वत और उनके पर्यटन महत्व को बखूबी उल्लेखित किया गया है।

पर्यटन के महत्व की चर्चा करें तो मन की शांति और शरीर को ऊर्जावान बनाए रखने, नई जानकारियों से अपने ज्ञान की अभिवृद्धि करने, देश दुनिया की संस्कृति को समझने के लिए पर्यटन का महत्व समझा जा सकता हैं। जीवन की भागदौड़ और आपाधापी के बीच पर्यटन आज के युग में मानव जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा बन गया हैं। वैसे तो पर्यटन के सभी क्षेत्र लुभाते हैं परन्तु आज पर्यटन की अवधारणा में कई श्रेणियों ने अलग – अलग रुचि के

पर्यटकों का समूह बना दिया हैं।

मसलन ऐतिहासिक, प्राकृतिक, साहसिक, सांस्कृतिक, जनजाति, धार्मिक – आध्यात्मिक आदि रुचि पर आधारित पर्यटन। इन मुख्य विषयों में भी अनेक उप श्रेणियां विकसित हो गई हैं। मेडिकल, शिक्षा और उद्योग भी आज पर्यटन क्षेत्र में जुड़ गए हैं। भारत में साहसिक खेलों ने प्रमुख रुप से पर्यटकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया हैं। यह खेल पर्यटन के क्षेत्र में प्रमुख रुप से उभर कर आए हैं।

पर्यटन के विविध क्षेत्रों के बीच लेखकों ने भारत में विश्व के सबसे प्राचीन पर्वत अरावली के विशेष सन्दर्भ में पर्वतीय पर्यटन को अपने लेखन का विषय बना कर नए दृष्टिकोण के साथ विश्व परिपेक्ष में प्रस्तुत किया है। निःसंदेह हमारे पर्वत पर्यटन की दृष्टि से एक विस्तृत कैनवास प्रस्तुत करते हैं।

हमेशा से कोतूहल का विषय रहा पर्वतों का बनना, इनकी श्रंखलाएं, संरचना, प्रकार, ऊंचे शिखर, भौगोलिक स्वरूप, जलवायु पर प्रभाव आदि को बखूबी प्रस्तुत किया गया हैं। इन सभी पक्षों को लेकर दुनिया और भारत के प्रमुख पर्वतों की सारगर्भित जानकारी का समावेश ज्ञानवर्धक होने के साथ – साथ पर्वतों से जुड़े प्रश्नों का समाधान कर जिज्ञासा को शांत करता है।

विश्व के पर्वतों के प्रमुख पर्यटन स्थलों और भारत के पर्वतीय पर्यटन को भी जोड़ा गया है। पर्वत अर्वाचीन कल से भौगोलिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति रहे हैं। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारत में एक से एक शानदार पहाड़ हैं, पहाड़ों की श्रृंखलाएं हैं, सुंदर एवं मनोरम घाटियां हैं।

पर्वतों की चोटियों और इनके मध्य स्थित भोलेनाथ और देवी मंदिरों

ने धर्म और आध्यात्म की सरिता प्रवाहित करते हुए सदियों से धार्मिक पर्यटन यात्राओं से पर्वतों को मानव से जोड़े रक्खा। इनमें पाई जाने वाली विविध प्रकार उपयोगी वनस्पति और जड़ीबूटियां और जल के श्रोत के लाभों से सभी परिचित हैं। पहाड़ों की व्यापक जैव विविधता, झीलें, नदियां जहां पर्यटन का आधार बनती हैं वहीं पर्यावरण संतुलन की दृष्टि से महत्वपूर्ण निधि हैं।

भारत में पर्वतों, नदियों, समुद्रों, झीलों में पर्वतारोहण, ट्रेकिंग, हाइकिंग, रॉक क्लाइंबिंग, स्कीइंग, नदी व्हाइट वाटर राफ्टिंग, स्केटबोर्डिंग, वॉटर स्कीइंग, पैरा पैराग्लाइडिंग, बंजी जंपिंग, स्कूबा डाइविंग, गोताखोरी जैसे एडवेंचर स्पोर्ट्स को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पर्यटकों का एक वर्ग इनका दीवाना हैं। उत्तर और उत्तर–पूर्वी हिस्सों के हिमालयी क्षेत्र, पश्चिमी और पूर्वी घाटियां दक्षिण, दक्षिण–पश्चिम और दक्षिण–पूर्वी हिस्सें पर्वतारोहण, ट्रेकिंग, स्कीइंग और चट्टानों पर चढ़ाई के लिए सर्वोत्तम गंतव्यों में से हैं। जबकि राफ्टिंग और पानी में गोताखोरी जैसे खेलों के लिए उत्तर, पश्चिम और दक्षिण की नदियाँ लोकप्रिय हैं। यही नहीं पूर्वी तटीय क्षेत्रों और समुद्री क्षेत्रों में पानी से जुड़े कई रोमांचकारी खेल पर्यटकों को पसंद आते हैं जिनके लिए वो इन क्षेत्रों की यात्रा करते हैं।

कोटा निवासी राजस्थान सरकार में सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के पूर्व जॉइंट डायरेक्टर डॉ.प्रभात कुमार सिंघल और उनके अनुज भ्राता भूगोलविद् राजकीय गर्ल्स कॉलेज बूंदी के पूर्व प्राचार्य प्रो. प्रमोद कुमार सिंघल द्वारा संयुक्त रूप से लिखित पुस्तक **'पर्वतीय पर्यटन – विशेष सन्दर्भ अरावली'** स्वागत योग्य एवं सराहनीय पहल है। लेखक डॉ प्रभात कुमार सिंघल मूलतः इतिहास के अधेता रहे हैं जबकि प्रो. प्रमोद कुमार सिंघल भूगोलवेता है।

यह एक मनिकांचन संयोग बन पड़ा है कि इतिहाकार एवं भूगोल वेत्ता ने पर्वतीय पर्यटन के विविध पक्षों को प्रस्तुत किया है। इसका मूल्यांकन तो पाठक करेंगे ही करेंगे किन्तु मेरी दृष्टि में इन्होंने विषय के साथ न्याय किया है। दोनों लेखकों को उनके श्रम साध्य कार्य के लिए मैं अपनी और से बधाई देते हुए पुस्तक की सफलता के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं। आशा करता हू की यह पुस्तक जहां एक ओर पर्यटन के प्रोत्साहन में सहायक होगी वहीं दूसरी ओर पर्यावरणीय चेतना विकसित करने में सफल रहेगी।

प्रो. (डॉ.) बृज किशोर शर्मा
52/30, प्रताप नगर, टोंक रोड़,
जयपुर (राजस्थान)
मोबाईल नं. 9079049796

लेखकीय

पर्वत सृष्टि के प्रारंभ से ही मानव के आकर्षण का केंद्र रहे हैं। इतने ऊंचे और विशाल आकार के पर्वतों की उत्पत्ति कैसे हुई आज भी यह मनुष्य के लिए एक अनबुझी पहेली बनी हुई है। भौगोलिक रूप से विश्व में कई प्रकार के पर्वत पाए जाते हैं जो विविध भू – गर्भीय हलचल का परिणाम हैं। इनका विस्तार, ऊंची चोटियां, श्रृंखला, सम्पदा, जलवायु पर प्रभाव आदि कोतूहल का विषय हैं। पर्वतारोहण ओर देशाटन कर साहसी और जिज्ञासु मानव ने इनके विषय में रोचक जानकारी एकत्रित करने का प्रयास किया है।

हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी अनेक पौराणिक पर्वतों का उल्लेख मिलता है। भगवान शिव शंकर का निवास स्थान कैलाश पर्वत आज भी जन – जन की आस्था का केंद्र है। ज्यादातर देवियों के आस्था धाम पर्वतों की गोद में स्थित हैं। पर्वत की संजीवनी जड़ीबूटी से हनुमानजी जी ने लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा की थी सर्वविदित है। अर्वाचीन काल से पर्वत ऋषि–मुनियों की तपोभूमि रहे हैं जहां रह कर उन्होंने कई सिद्धियां प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। गंगा – यमुना जैसी अनेक पवित्र नदियों का स्रोत पर्वतों के हिमाच्छादित शिखर और ग्लेशियर हैं।

पर्वतीय पर्यटन के रूप में आज विश्व के पर्वतों में स्थित ऊंचे –ऊंचे झरनों, झीलों, फूलों की घाटियों, वनस्पतियों, जड़ी–बूटियों, वन्यजीवों, हरे–भरे उद्यानों, ठंडे मौसम, आध्यात्म और शांत वातावरण के लिए पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बने हुए हैं। स्विट्जरलैंड के आल्प्स पर्वत पर स्थित झीलें, जापान का फुजियामा पर्वत, अप्पलेशियन पर्वत के उत्तर में स्थित नियाग्रा फाल्स,न्यूजीलैंड के दक्षिणी आल्प्स पर्वतों की हिमाच्छादित घाटियाँ, हॉगकॉग में एक

पहाड़ी पर स्थित विश्व की सबसे ऊंची ब्रॉन्ज की महात्मा बुद्ध की मूर्ती और वहां तक पहुंचने के लिए बनाया गया विश्व का सबसे लंबा रोप –वे आदि विश्व में पर्वतीय पर्यटन के आदर्श उदाहरण माने जाते हैं।

भारत में हिमालय पर्वत में स्थित बद्रीनाथ, केदारनाथ, नैनीताल, मसूरी,दार्जिलिंग, राजस्थान में अरावली पर्वत पर माउंट आबू, मध्यप्रदेश में सतपुड़ा पर्वत पर पंचमढ़ी, महाराष्ट्र में सह्याद्री की पहाड़ी पर महाबलेश्वर और लोनावाला,तमिलनाडु में नीलगिरी पहाड़ी पर ऊटी ,पालनी पहाड़ी पर कोडाइकनाल तथा केरल में अन्नेमलाई की पहाड़ियों में स्थित मुन्नार हिल स्टेशन आदि पर्वतीय पर्यटक स्थल सैलानियों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र हैं।

राजस्थान की अरावली पर्वतमाला और इसकी वादियों के पर्यटक स्थल देश –विदेश के पर्यटकों में विशेष लोकप्रिय हैं। माउंट आबू राजस्थान का विश्व प्रसिद्ध हिल स्टेशन है। झीलों की नगरी उदयपुर, चित्तौड़गढ़ और कुम्भलगढ के दुर्ग, अजमेर में तीर्थराज पुष्कर और ख्वाजा साहब की दरगाह, जयपुर की पिंक सिटी, दौसा की बावड़ियों, अलवर की सिलीसेढ़ झील और सीकर में जीणमाता, भैरव हर्षनाथ और खाटूश्यामजी के तीर्थ अरावली पर्वत श्रृंखला के प्रमुख पर्यटक स्थल हैं। विश्व पर्वतों की ऐसी ही अनेक खूबियों को दृष्टिगत रखते हुए लेखक "पर्वतीय पर्यटन–विशेष सन्दर्भ अरावली" पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित हुए। पुस्तक विश्व के साथ – साथ विशेष रूप से राजस्थान में स्थित विश्व के सबसे प्राचीन पर्वत अरावली और इनसे संबद्ध पर्यटन विकास को मुख्य आधार मान कर लिखी गयी है। यह पुस्तक पर्वतीय पर्यटन के क्षेत्र में एक मानक पुस्तक बने लेखकों का यही प्रयास रहा है।

अपने गुरुजनों भूगोल विद् डॉ. एच. एस. शर्मा एवं इतिहास विद्

डॉ.बी. के. शर्मा को नमन करते हुए गर्व का अनुभव करते हैं। प्रो. (डॉ.) बी.के.शर्मा ने प्राक्कथन लिख कर अपना आशीर्वाद प्रदान किया और पुस्तक के महत्व को दुगुनित किया। हम इनको ह्रदय से साधुवाद ज्ञापित करते हैं। पुस्तक लेखन में दिए गए विशेष सहयोग के लिए डॉ.बी.एल.शर्मा पूर्व प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय, कोटा , महाराणा कुम्भा पुरुस्कार से सम्मानित डॉ. एच. सी. जैन पूर्व प्राचार्य वाणिज्य महाविद्यालय, कोटा एवं डॉ.मोहन लाल गुप्ता पूर्व सहायक निदेशक, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान का तहे दिल से आभार व्यक्त करते हैं।

डॉ. दीपक कुमार श्रीवास्तव संभागीय अधीक्षक एवं प्रभारी राजकीय सार्वजनिक मंडल पुस्तकालय, कोटा, एडवोकेट अख्तर खान 'अकेला', वरिष्ठ पत्रकार श्री के. डी. अब्बासी, श्रीमती तकसीम बानो के भी आभारी हैं जिन्होंने विविध प्रकार सहयोग प्रदान किया। लेखन के प्रति हमारा मनोबल बढ़ाने के लिए हम श्री अनुज कुमार कुच्छल सीनियर सेक्शन इंजीनियर, रेलवे मंडल कोटा, श्रीमति मंजु सिंघल एवं श्रीमती नीलम सिंघल के प्रति भी ह्रदय से आभार व्यक्त करते हैं।

आशा करते हैं यह पुस्तक पर्वतीय पर्यटन को प्रोत्साहित करने में सहायक होगी और पुस्तक प्रेमियों, छात्र– छात्राओं एवं प्रबुद्धजनों को पर्वतों के बारे में उनकी जिज्ञासा का समाधान भी करेगी। पाठकों के सुझाव स्वागत योग्य हैं।

शुभकामनाओं सहित !

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल
प्रो. प्रमोद कुमार सिंघल
लेखक द्वय

अनुक्रम

(1) पर्वतों का विस्म्यकारी संसार............................1-24

(2) भारत के बहुरंगी पर्वत....................................25-44

(3) अरावली पर्वत श्रृंखला 45-71

(4) हिल स्टेशन माउंट आबू..................................72-76

(5) झीलों का शहर उदयपुर 77-96

(6) अरावली श्रृंखला का नगीना चितौड़गढ़...........97-106

(7) पहाड़ियों का नगर डूंगरपुर 107-114

(8) सुधामाता की महिमा जालोर 115-121

(9) प्रकृति, शांति और धर्म का संगम रणकपुर..122-128

(10) राजस्थान की थर्मोपोली हल्दीघाटी..............129-137

(11) दिलचस्प अतीत का साक्षी अजमेर 138-151

(12) विश्वस्तरीय गुलाबी नगर.............................152-165

(13) मनोरम पर्वतीय घाटियों से श्रृंगारित अलवर 166-174

(14) शेखावटी का हृदयस्थल सीकर 175-180

(15) प्रकृति, वन्यजीव एवं पुरातत्व का धनी प्रतापगढ़ 181-187

(16) मेंहदीपुर बाला जी की महिमा
सुनाता दौसा.. 188-193

(17) शेखावटी का सिरमौर झुंझुंनू...................... 194-202

सन्दर्भ

1 District Gazetteer Udaipur, Sirohi, Chittorgarh, Ajmer, Jaipur, Alwar, Sikar, Published by Department of Gazetteer, Govt. Of Rajasthan.

2 Tod (Karnel) Jems, Annals and Antiquities of Rajasthan, Allahbad, 1965.

3 Resources Atlas of rajasthan, Published by science and technology dept of rajasthan, 2009.

4 Sharda, Har Bilas, Ajmer Historicals and Discriptive, Ajmer, 1941.

5 Bhasin, Sanjeev Kumar, Forts and Palaces of Rajasthan, Panchsheel Prakashan, Jaipur, 2013.

6 Gehlot, J.S. Rajputana Ka Itihas, jodhpur.

7 Dr. Singhal, Prabhat Kumar, Udaipur - Rajasthan ka Kashmir, VSRD Acadiemic Publishing, Kanpur, April 2021.

8 प्रो. शर्मा, एच एस, डॉ. शर्मा, एम एल, राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2015.

9 डॉ. जैन, महावीर, श्रीमती कांति जैन,लक्ष्य राजस्थान, मनु प्रकाशन, जयपुर 2020.

10 डॉ. सिंह, सविंद्र, भू–आकृति विज्ञान, वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर.

11 पनगडिया, बी.एल., राजस्थान का इतिहास, नई दिल्ली, 1982.

12 सिंह, रघुवीर, पूर्व आधुनिक राजस्थान, उदयपुर, 1951.

13 डॉ. सिंघल, प्रभात कुमार एवं, सिंघल, प्रमोद कुमार, अदभुत राजस्थान, सहित्यागार, जयपुर,2021.

14 डॉ. गुप्ता, मोहन लाल, राजस्थान (संभागवार) सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्यन, जोधपुर, 2012.

15 डॉ. सिंघल, प्रभात कुमार, हमारा भारत हमारी शान, वी.एस. आर.डी. एकेडमिक पब्लिशिंग, कानपुर, 2021.

17 लाल, डी.एस., जलवायु और समुद्र विज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

18 तिवारी, आर. सी.,भारत का भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन, इलहबाद.

19 डॉ. सक्सेना, हरि मोहन, राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर.

20 सूजस पत्रिका, प्रकाशक, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, जयपुर, राजस्थान सरकार.

21 गूगल सर्च, विकिपीडिया एवं अन्य साइट्स.

22 पर्यटन के व्यक्तिगत भ्रमण के अनुभव.

23 समाचार पत्रों एवं विभिन्न न्यूज पोर्टल्स पर प्रकाशित डॉ. सिंघल के आलेख